रवि खण्डेलवाल

कौन कहता है कि जग में काम बिकता है
जिस तरफ भी देखिए बस नाम बिकता है

है अगर देने की ताक़त दाम मुँह मांगा
आपके हक़ में यहाँ परिणाम बिकता है

सबके अपने-अपने मठ हैं, हैं दुकानें भी
श्याम बिकता है, कहीं पर राम बिकता है

मोल कौड़ी का न इज्ज़तदार का यारो
सुर्ख़ियों में आजकल बदनाम बिकता है

है ज़रुरत सत्य को 'रवि' मुँह छिपाने की
झूठ चौड़े में सुबह से शाम बिकता है

गीत गजल पढ़ने से पहले नाम पढ़ा करते हैं लोग
सोच समझकर ही कुछ उसके बाद लिखा करते हैं लोग

रिश्तों की मर्यादा रखनी हो या मतलब का रिश्ता
जिससे मतलब उससे हैलो हाय किया करते हैं लोग

घट जाने पर घटना - दुर्घटना के, अक़्सर ये पाया
अटकलबाजी में बढ़ चढ़ के भाग लिया करते हैं लोग

आम जनों के दुःख दर्दों का ऐसा ही कुछ लेखा है
मर्ज बढ़ा लेते हैं उसके बाद दवा करते हैं लोग

अक्सर कातिल इल्ज़ामों से बच जाते न्यायालय में
डर के मारे सच भीतर रख झूठ बयां करते हैं लोग

अपना सब-कुछ खून पसीना तक देकर 'रवि' खेतों को
फसलों के बिक जाने पर ही जोड़ गुणा करते हैं लोग

ISSN:2583-8849